Dainik Bhaskar

दैनिक भास्कर

भारत का सबसे तेज बढ़ता अखबार

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur up Country	26-Mar-2017	09

सरसों में 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन लक्ष्य हासिल करेगा प्रदेश

जयपुर में आयोजित पहली एसईए रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव में बोले कृषि मंत्री

बिजनेस रिपोर्टर | जयपुर

प्रदेश में सरसों की बंपर पैदावार के कारण इस बार 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन लक्ष्य को हासिल करना संभव हो सकेगा। यह जानकारी शनिवार को यहां कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने दी। वे यहां सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन की ओर से आयोजित रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

सैनी ने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है, तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे सरसों की ऐसी परंपरागत किस्मों को विकसित करें, जिनमें तेल की मात्रा ज्यादा हो और वह विश्वस्तरीय हों।

आज भारत जरूरत का महज 36 प्रतिशत खाद्यान्न तेल स्वयं उत्पादित कर रहा है और बाकी आयात किया जा रहा है। राजस्थान में उत्पादित होने वाली सरसों में तेल की मात्रा 40 से 42% है, जिसे अच्छी किस्मों को प्रोत्साहन देकर बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। डॉ. सैनी ने बताया सरसों के उत्पादन में कनाडा और चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है।

जयपुर सरसों की राजधानी

द सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) की ओर से पहली बार यह रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव आयोजित की गई। रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खंडेलिया और विजय डाटा ने अपने विचार व्यक्त किए। एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल बंपर पैदावार हुई है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सोयाबीन पैदावार में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है और इंदौर को सोयाबीन की राजधानी कहा उसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल है और जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

Dainik Bhaskar

दैनिक भास्कर

भारत का सबसे तेज बढ़ता अखबार

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	28

सरसों में उत्पादन लक्ष्य हासिल करेगा प्रदेश

बिजनेस रिपोर्टर | जयपुर

प्रदेश में सरसों की बंपर पैदावार के कारण इस बार 20 क्विंटल/ हेक्टेयर के उत्पादन लक्ष्य को हासिल करना संभव हो सकेगा। यह जानकारी शनिवार को कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने दी। वे सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

सैनी ने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है, तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा।

उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे सरसों की ऐसी परंपरागत किस्मों को विकसित करें, जिनमें तेल की मात्रा ज्यादा हो और वह विश्वस्तरीय हों। आज भारत जरूरत का महज 36% खाद्यान्न तेल

उत्पादित कर रहा है। राजस्थान में उत्पादित होने वाली सरसों में तेल की मात्रा 40 से 42% है, जिसे अच्छी किस्मों को प्रोत्साहन देकर बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। डॉ. सैनी ने बताया सरसों के उत्पादन में कनाडा और चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। राजस्थान देश में सबसे अधिक 48% उत्पादन के साथ पहले स्थान पर है। सरकार सरसों आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने का पूरा प्रयास कर रही है।

उत्पादन लक्ष्य : नीलसन के सर्वे में देश में 72 लाख टन सरसों के उत्पादन का लक्ष्य है। वहीं, सीओओआईटी/मोपा ने 69.25 लाख टन के उत्पादन का लक्ष्य रखा है।

जयपुर सरसों की राजधानी

द सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) की ओर से पहली बार यह रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव आयोजित की गई। रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खंडेलिया, अडानी विल्मार लि. के असिस्टेंट वीपी सत्येंद्र शुक्ला और विजय डाटा ने विचार व्यक्त किए। एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि इस साल बंपर पैदावार हुई है।

उन्होंने कहा कि जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सम्मेलन में देश भर से 300 प्रतिनिधि एवं विशेष आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया।

डॉ. अनुपम बारीक अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार व डॉ. एस. के. चक्रबर्ती अतिरिक्त महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च भारत सरकार विशिष्ट अतिथि थे।

जीएम तकनीक को अनुमति नहीं

कृषि मंत्री ने स्पष्ट किया कि सरसों के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सरसों की नई उत्पादन तकनीक और किस्में विकसित की जाएं। लेकिन उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए जेनेटिक मॉडीफाइड तकनीक को भी अनुमति नहीं दी जाएगी। हाल ही के कुछ वर्षों में प्रति व्यक्ति खाद्यान्न तेल का उपभोग बढ़ा है। वर्ष 2009-10 में जहां प्रति व्यक्ति प्रति साल 13.3 किलो खपत थी, जो बढ़कर वर्ष 2012-13 में 15.8 किलोग्राम हो गई है।

Dainik Bhor

दैनिक भोर

स्थापित 1972

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	08

राजस्थान सरसों के 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के करीब है : प्रभुलाल सैनी

जयपुर, 25 मार्च (का.स.)। कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार हुई है और राज्य निर्धारित किए गए 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के बहुत करीब है। उन्होंने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर थाए जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता हैए तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की।कृषि मंत्री डॉ. सैनी शनिवार को यहां एक निजी होटल में इंटरनेशन कन्सलटीव ग्रुप फॉर रिसर्च ऑन रेपसीड द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सरसों की ऐसी परम्परागत किस्मों को विकसित करें, जिनमें तेल की मात्रा ज्यादा हो और वह विश्वस्तरीय हों। आज भारत जरूरत का महज 36 प्रतिशत खाद्यान्न तेल स्वयं उत्पादित कर रहा है और बाकी आयात किया जा रहा है। राजस्थान में उत्पादित होने वाली सरसों में तेल की मात्रा 40 से 42 प्रतिशत है, जिसे अच्छी किस्मों को प्रोत्साहन देकर बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

डॉ. सैनी ने बताया सरसों के उत्पादन में कनाडा और चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। राजस्थान देश में सबसे अधिक 48 प्रतिशत सरसों उत्पादित करते हुए पहले स्थान पर है। सरकार सरसों आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने का पूरा प्रयास कर रही है। सरसों पर लगने वाले चूंगी कर को 1.5 प्रतिशत से घटाकर एक प्रतिशत किया गया। हाल ही में सरकार द्वारा इसे नकारात्मक सूची से बाहर किया गया है, जिसके बाद राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना और राजस्थान कृषि प्रसंस्करण एवं प्रोत्साहन नीति.2015 के तहत मिलने वाले फायदे सरसों के प्रसंस्करण उद्योग लगाने वाले उद्यमियों को मिल सकेंगे। कृषि मंत्री ने स्पष्ट किया कि सरसों के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सरसों की नई उत्पादन तकनीक और किस्में विकसित की जाएं। लेकिन उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए जेनेटिक मॉडीफाइड तकनीक को भी अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने वैज्ञानिकों से भी परम्परागत किस्मों पर ही अनुसंधान करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि हाल ही के कुछ वर्षों में प्रति व्यक्ति खाद्यान्न तेल का उपभोग बढ़ा है। वर्ष 2009-10 में जहां प्रति व्यक्ति प्रति साल 13.3 किलो खपत थीए जो बढ़कर वर्ष 2012-13 में 15ण्8 किलोग्राम हो गई है। डॉ. सैनी ने बताया कि साल दर साल खाद्यान्न तेल की बढ़ते उपयोग को ध्यान में रखते हुए तिलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने पर जोर देना होगा। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिकए सरसों के प्रसंस्करण से जुड़े उद्यमी और बड़ी संख्या में किसान व व्यापारी उपस्थित थे।

Dainik Jalte Deep

दैनिक जलते दीप

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	07

राजस्थान में दो साल बाद हुई सरसों की बम्पर पैदावार : सैनी

सरसों उत्पादन में भारत को आत्म निर्भर बनना होगा : चतुर्वेदी

■ जलतेदीप कासं, जयपुर

द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एसईए) की ओर से अपनी एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सानिध्य में अपनी पहली रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 का शुभारंभ यहां मेरियट होटल में हुआ, इससे पूर्व कल शुक्रवार की शाम को प्रतिभागियों के पंजीकरण के बाद राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन हुए। आज सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी थे, उन्होंने इस कॉन्क्लेव को राजस्थान विशेष कर जयपुर में आयोजित किए जाने पर संगठन का आभार जताया।

कृषि मंत्री सैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि'' देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है, राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक कही जा सकती है। उन्होंने इसका श्रेय किसानों की मेहनत और अनुकूल जलवायु को दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए हमें और कम पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखना होगा। वैसे भी राजस्थान नवाचार के विषय में अग्रणी रहा है और यहां पहली बार ऑलिव एवं क्विनोवा तेलों का उत्पादन किया गया। खाद्य तेल सुरक्षा को बढ़ाने के साथ ही उन्होंने फसल की गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता प्रतिपादित की, भारत में सरसों का उत्पादन हजारों साल से हो रहा है लोगों का सरसों के प्रति विश्वास है हमें उस विश्वास को बनाए रखने के लिए गुणवत्ता में और सुधार लाना होगा साथ ही इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से उत्पादक किसान और निर्माताओं को एक मंच पर लाकर उनकी समस्याओं का समाधान खोजना होगा। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार इस प्रकार के नवाचारों के लिए सदैव तत्पर रहेगी। सैनी ने कहा कि प्रदेश में तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। इससे पूर्व रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डोलिया और विजय डाटा ने अपने विचार व्यक्त किए।

अपने स्वागत भाषण में एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल बम्पर पैदावार हुई है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सोयाबीन पैदावार में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है और इंदौर को सोयाबीन की राजधानी कहा उसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल है और जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उन्होंने कहा कि द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया विगत 15 वर्षों से इंटरनेशनल केस्टर कॉन्फ्रेस आयोजित करता आ रहा है और इसी की सफलता को देखते हुए हमने समान रूप से सरसों की पैदावार पर ध्यान देने के लिए इस कॉन्क्लेव का आयोजन किया है और इसकी शुरूआत जयपुर से की जा रही है जिसे वार्षिक स्तर पर आयोजित किया जाएगा और आशा है कि इस प्रकार के सम्मेलन में उत्पादक किसान, निर्माता, वैज्ञानिकों, सरकार के अधिकारियों और कारोबारियों को एक मंच मिलेगा और वे एक दूसरे के विचार साझा कर सकेंगे मुझे आशा है कि इससे आने वाले समय में सरसों के उत्पादन में वृद्धि होने के साथ हम इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

Dainik Navjyoti

दैनिक नवज्योति

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	13

राजस्थान में सरसों की बम्पर पैदावार : सैनी

ब्यूरो/नवज्योति,जयपुर

द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एसईए) की ओर से अपनी एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सानिध्य में अपनी पहली रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 का शुभारंभ हुआ। शनिवार को सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है, राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक कही जा सकती है। उन्होंने इसका श्रेय किसानों की मेहनत और अनुकूल जलवायु को दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए हमें और कम

पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखना होगा। वैसे भी राजस्थान नवाचार के विषय में अग्रणी रहा है और यहां पहली बार ऑलिव एवं क्विनोवा तेलों का उत्पादन किया गया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार इस प्रकार के नवाचारों के लिए सदैव तत्पर रहेगी। सैनी ने कहा कि प्रदेश में तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल बम्पर पैदावार हुई है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सोयाबीन पैदावार में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है और इंदौर को सोयाबीन की राजधानी कहा उसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल है और जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस सम्मेलन में प्रख्यात वक्ता एवं पूरे भारत के पैनल सदस्यों के बीच दिन भर चले विविध सत्रों में विचार विमर्श एवं खुली चर्चा चली।

DNA

EDITION	DATE	PAGE, NO
Jaipur	26-Mar-2017	14

Research traditional varieties instead of GM technique: Saini

Agri minister rejects Genetic Modified method for increasing productivity of mustard crop yet again

DNA Correspondent @jaipurdna

Jaipur: Agriculture minister Prabhulal Saini has once again reiterated that no permission for Genetic Modified (GM) technique for increasing productivity of mustard crop will be given in the state.

The state government has also decided to reduce the duty on mustard from 1.5% to 1% giving respite to industries involved in the processing of mustard. He has instead laid stress on developing new varieties and techniques of increasing the production. He was speaking at an international seminar organised in city on Saturday.

He asked the scientists to do research on traditional varieties. This is, however, not the first time Saini has shown his disapproval for GM mustard, as previously at many other forums too, Saini has been of this opinion.

The agriculture experts were surprised during GRAM summit, held in the city in November, over the involvement of Monsanto, which is associated with GM mustard. The company had been roped in as a silver partner in the event along with other companies for the three-day summit.

Notably, Rajasthan is one of the leading states in the country in mustard production is very near to achieve its target of 20 quintals per hectare mustard in the state. Previously, the state used to produce 1,400 Kg per hectare, while now in this season, there are expectations that this will reach 2000 kg per hectare.

Speaking at the seminar, Saini said that the scientists should develop such traditional varieties in which the quantity of oil is more. He said that there has been an increase in the consumption of food oil and therefore, there is a need to increase production of oilseed crops.

Meanwhile, the reduction in the duty on mustard by 0.5% will give some respite to the mustard processing units which will also get benefits of Rajasthan Agriculture Processing Policy of 2015.

Minister Prabhu Lal Saini addressing the gathering in city on Saturday. —DNA

0.5% DUTY REDUCED

The state government has also decided to reduce the duty on mustard from 1.5% to 1% giving respite to industries involved in the processing of mustard. Agriculture minister has has laid stress on developing new varieties and techniques of increasing the production. He was speaking at an international seminar organised in city on Saturday. Notably, Rajasthan is one of the leading states in the country in mustard production is very near to achieve its target of 20 quintals per hectare mustard in the state.

रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव-2017

राज्य में दो साल बाद हुई सरसों की बम्पर

जयपुर। द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एसईए) की ओर से अपनी एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सानिध्य में अपनी पहली रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 का शुभारंभ यहां मेरियट होटल में हुआ, इससे पूर्व कल शुक्रवार की शाम को प्रतिभागियों के पंजीकरण के बाद राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन हुए। आज सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी थे, उन्होंने इस कॉन्क्लेव को राजस्थान विशेष कर जयपुर में आयोजित किए जाने पर संगठन का आभार जताया।

कृषि मंत्री सैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि'' देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है, राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक कही जा सकती है। उन्होंने इसका श्रेय किसानों की मेहनत और अनुकूल जलवायु को दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए हमें और कम पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखना होगा। वैसे भी राजस्थान नवाचार के विषय में अग्रणी रहा है और यहां पहली बार ऑलिव एवं क्विनोवा तेलों का उत्पादन किया गया। खाद्य तेल सुरक्षा को बढ़ाने के साथ ही उन्होंने फसल की गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता प्रतिपादित की, भारत में सरसों का उत्पादन हजारों साल से हो रहा है लोगों का सरसों के प्रति विश्वास है हमें उस विश्वास को बनाए रखने के लिए गुणवत्ता में और सुधार लाना होगा साथ ही इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से उत्पादक किसान और निर्माताओं को एक मंच पर लाकर उनकी समस्याओं का समाधान खोजना होगा। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार इस प्रकार के नवाचारों के लिए सदैव तत्पर रहेगी। सैनी ने कहा कि प्रदेश में तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। इससे पूर्व रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डोलिया और विजय डाटा ने अपने विचार व्यक्त किए।

अपने स्वागत भाषण में एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल बम्पर पैदावार हुई है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सोयाबीन पैदावार में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है और इंदौर को सोयाबीन की राजधानी कहा उसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल है और जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उन्होने कहा कि द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया विगत 15 वर्षों से इंटरनेशनल केस्टर कॉन्फ्रेस आयोजित करता आ रहा है और इसी की सफलता को देखते हुए हमने सम्मान रूप से सरसों की पैदावार पर ध्यान देने के लिए इस कॉन्क्लेव का आयोजन किया है और इसकी शुरूआत जयपुर से की जा रही है जिसे वार्षिक स्तर पर आयोजित किया जाएगा और आशा है कि इस प्रकार के सम्मेलन में उत्पादक किसान, निर्माता, वैज्ञानिकों, सरकार के अधिकारियों और कारोबारियों को एक मंच मिलेगा और वे एक दूसरे के विचार साझा कर सकेंगे मुझे आशा है कि इससे आने वाले समय में सरसों के उत्पादन में वृद्धि होने के साथ हम इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत को भारी मात्रा में खाद्य तेल का आयात करना पड़ रहा है और औसतन इसमें प्रतिवर्ष 1 मिलियन टन का इजाफा हो रहा है जिसके वर्ष 2025 तक 25मिलियन टन के पहुंचने की उम्मीद है ऐसे हालात में हमारी खाद्य तेल सुरक्षा के विफल होने की उम्मीद है क्या ऐसी स्थिति को हमारा देश वहन कर पाएगा, इसलिए हमें तेल उत्पादन में आत्म निर्भर बनना होगा, यह मस्टर्ड कॉन्क्लेव इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास है।

इस सम्मेलन में प्रख्यात वक्ता एवं पूरे भारत के पैनल सदस्यों के बीच दिन भर चले विविध सत्रों में विचार विमर्श एवं खुली चर्चा चली। इन सत्रों में निर्माताओं, निर्यातकों और आयातकों, टेक्नोलॉजिस्ट्स तथा कमोडिटी एक्सचेंज के खिलाड़ियों, ब्रोकर्स एवं डीलर्स के समक्ष आ रही समस्याओं को उठाया गया तथा उनके समाधान की दिशा में एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई।

र पैदावार

इस अवसर पर एसईए रेपसीड/मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डेलिया ने भी सम्बोधित किया। डॉ. अनुपम बारीक अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार व डॉ. एस. के. चक्रबर्ती अतिरिक्त महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) इण्डियन काउन्सिल ऑफएग्रीकल्चर रिसर्च भारत सरकार विशिष्ट अतिथि थे।

सम्मेलन में उत्पादकता में सुधार लाने के लिए वक्ता जिनमें थॉमस मिल्के प्रधान सम्पादक ऑयल वर्ल्ड, डॉ. दीपक पेन्टल, डॉ. विजय सरदाना, डॉ. पी.के.राय, डॉ. प्रबोध हल्दे, नागराज मेडा, बी. चटर्जी आदि के पैनल ने मूल्य दृष्टिकोण पर अपने गहन विचार व्यक्त किए। इस सम्मेलन में पूरे भारत भर से 300 प्रतिनिधि एवं विशेष आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया तथा अपने विचार साझा किए।

रेपसीड-मस्टर्ड ऑयल से स्वास्थ्य पर होने वाले लाभों की जानकारी जयपुर के शीर्ष कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एस.एम. शर्मा ने दी। सम्मेलन के अंत में रेप मस्टर्ड क्रॉप सर्वे 2017 की घोषणा सुरेश सांवत वरिष्ठ प्रबन्धक क्लाइंट सॉल्यूशन्स निएलसन (इण्डिया) प्रा.लि. मुम्बई ने की।

Jaipur Mahanagar Times

जयपुर महानगर टाइम्स

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	14

किसान व तेल निर्माताओं की समस्याओं का समाधान हो

रेपसीड कॉन्क्लेव-2017 में कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने किया आह्वान

वाणिज्य संवाददाता

जयपुर। द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से अपनी एसईए रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सान्निध्य में अपनी पहली रेपसीड मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 का शुभारंभ जयपुर में किया गया। कॉन्क्लेव से एक दिन पूर्व प्रतिभागियों के पंजीकरण के बाद राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किए गए। इस कॉन्क्लेव के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बेहतर मानसून से इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है। प्रदेश के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टेयर 32 क्विंटल सरसों का उत्पादन हुआ है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए हमें कम पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखने होंगे।

राजस्थान में इस प्रकार की कॉन्क्लेव के माध्यम से उत्पादक किसान और तेल निर्माताओं को एक मंच पर लाकर उनकी समस्याओं का समाधान खोजना होगा। कॉन्क्लेव में अपने स्वागत भाषण के दौरान एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि पिछले दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस बार बम्पर पैदावार हुई है। हमने सरसों की पैदावार पर फोकस बनाने के लिए इस कॉन्क्लेव का आयोजन किया है। इसकी शुरुआत जयपुर से की जा रही है। इस प्रकार के सम्मेलन से उत्पादक, निर्माता, कारोबारी, वैज्ञानिक और सरकार के अधिकारियों के एक मंच मिलने से वो अपने विचार एक दूजे से साझा कर सकेंगे। आने वाले समय में सरसों की पैदावार को और अधिक बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। सम्मेलन में प्रख्यात वक्ता एवं देश के पैनल सदस्यों के बीच दिन भर चले विविध सत्रों में विचार रखने तथा समस्याओं के समाधान की दिशा में एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई।

Morning News

मॉर्निंग न्यूज

समूचे राजस्थान का सम्पूर्ण अखबार

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	28-Mar-2017	09

राजस्थान में दो साल बाद हुई सरसों की बम्पर पैदावार : सैनी

जयपुर। द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एसईए) की ओर से अपनी एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन कांउन्सिल के सानिध्य में अपनी पहली रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 का शुभारंभ यहां मेरियट होटल में हुआ, इससे पूर्व कल शुक्रवार की शाम को प्रतिभागियों के पंजीकरण के बाद राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन हुए। आज सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी थे, उन्होंने इस कॉन्क्लेव को राजस्थान विशेष कर जयपुर में आयोजित किए जाने पर संगठन का आभार जताया। कृषि मंत्री सैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि" देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है, राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक कही जा सकती है।

Morning News

मॉर्निंग न्यूज

समूचे राजस्थान का सम्पूर्ण अखबार

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	02

सरसों उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करेगा राजस्थान : सैनी

जयपुर (मोन्यू)। कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार हुई है और राज्य निर्धारित किए गए 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के बहुत करीब है। उन्होंने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर थाए जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की। कृषि मंत्री डॉ. सैनी शनिवार को एक निजी होटल में इंटरनेशन कन्सलटीव ग्रुप फॉर रिसर्च ऑन रेपसीड द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सरसों की ऐसी परम्परागत किस्मों को विकसित करें, जिनमें तेल की मात्रा ज्यादा हो और वह विश्वस्तरीय हों।

Naya India

नया इंडिया
nayaindia.com
बेबाक, बेधड़क, बेमिसाल

EDITION	DATE	PAGE, NO
Jaipur	26-Mar-2017	03

सरसों के बीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन का लक्ष्य

जयपुर, वार्ता। राजस्थान के कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा है कि राज्य में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार होने से राज्य निर्धारित बीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने की ओर बढ रहा है। डॉ. सैनी आज यहां इंटरनेशन कन्सलटीव ग्रुप फॉर रिसर्च ऑन रेपसीड द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है।

Rajasthan Punjab Kesari

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	02

राजस्थान में सरसों की बम्पर पैदावार हुई

इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन हुआ

सेमिनार को सम्बोधित करते कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी।

जयपुर,(कासं): कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार हुई है और राज्य निर्धारित किए गए 20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के बहुत करीब है। राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हैक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हैक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है, तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की। सैनी शनिवार को यहां इंटरनेशन कन्सलटीव ग्रुप फॉर रिसर्च ऑन रेपसीड की ओर से आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सरसों की ऐसी परम्परागत किस्मों को विकसित करें।

Rajasthan Patrika

राजस्थान पत्रिका

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	25

राजस्थान में सरसों की बम्पर पैदावार

जयपुर में रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव-2017

जयपुर. द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सहयोग से रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 का आयोजन किया। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राज्य कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी थे।

सैनी ने कहा कि देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है,

राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक है। राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए कम पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखना होगा। सैनी ने कहा कि प्रदेश में तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। इससे पूर्व रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डोलिया और विजय डाटा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल ब पर पैदावार हुई है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सोयाबीन पैदावार में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है और इंदौर को सोयाबीन की राजधानी कहा उसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल है और जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

Samachar Jagat
समाचार जगत
EDITION Jaipur
DATE 26-Mar-2017
PAGE NO 09

सरसों के 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के करीब राजस्थान : कृषि मंत्री

जयपुर। कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार हुई है और राज्य निर्धारित किए गए 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के बहुत करीब है। उन्होंने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है, तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की। कृषि मंत्री डॉ. सैनी शनिवार को यहां एक निजी होटल में द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की ओर से आयोजित एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सानिध्य में रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017

में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सरसों की ऐसी परम्परागत किस्मों को विकसित करें, जिनमें तेल की मात्रा ज्यादा हो और वह विश्वस्तरीय हों। आज भारत जरूरत का महज 36 प्रतिशत खाद्यान्न तेल स्वयं उत्पादित कर रहा है और बाकी आयात किया जा रहा है। राजस्थान में उत्पादित होने वाली सरसों में तेल की मात्रा 40 से 42 प्रतिशत है, जिसे अच्छी किस्मों को प्रोत्साहन देकर बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। डॉ. सैनी ने बताया सरसों के उत्पादन में कनाडा और चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। राजस्थान देश में सबसे अधिक 48 प्रतिशत सरसों उत्पादित करते हुए पहले स्थान पर है। सरकार सरसों आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने का पूरा प्रयास कर रही है।

सरसों पर लगने वाले चुंगी कर को 1.5 प्रतिशत से घटाकर एक प्रतिशत किया गया है। इस मौके पर एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया विगत 15 वर्षों से इंटरनेशनल केस्टर कॉन्फ्रेंस आयोजित करता आ रहा है और इसी की सफलता को देखते हुए हमने समान रूप से सरसों की पैदावार पर ध्यान देने के लिए इस कॉन्क्लेव का आयोजन किया है और इसकी शुरूआत जयपुर से की जा रही है जिसे वार्षिक स्तर पर आयोजित किया जाएगा एसईए रेपसीड, मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डेलिया ने भी सम्बोधित किया। डॉ. अनुपम बारीक अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार व डॉ. एस. के. चक्रबर्ती अतिरिक्त महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) इण्डियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च भारत सरकार विशिष्ट अतिथि थे।

सम्मेलन में उत्पादकता में सुधार लाने के लिए वक्ता जिनमें थॉमस मिल्के प्रधान सम्पादक ऑयल वर्ल्ड, डॉ. दीपक पेन्टल, डॉ. विजय सरदाना, डॉ. पी.के.राय, डॉ. प्रबोध हल्दे, नागराज मेडा, बी. चटर्जी आदि के पैनल ने मूल्य दृष्टिकोण पर अपने गहन विचार व्यक्त किए। इस सम्मेलन में पूरे भारत भर से 300 प्रतिनिधि एवं विशेष आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया तथा अपने विचार साझा किए।

दैनिक संजीवनी टुडे
sanjeevnitoday.com
समय के साथ बढ़ता अख़बार
Sanjivani Today

EDITION	DATE	PAGE, NO
Jaipur	26-Mar-2017	03

सरसों के 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के करीब राजस्थान : कृषि मंत्री

जयपुर, (कासं)। कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार हुई है और राज्य निर्धारित किए गए 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के बहुत करीब है। उन्होंने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है, तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की।

कृषि मंत्री डॉ. सैनी शनिवार को यहां एक निजी होटल में इंटरनेशन कन्सलटीव ग्रुप फॉर रिसर्च ऑन रेपसीड द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सरसों की एसी परम्परागत किस्मों को विकसित करें, जिनमें तेल की मात्रा ज्यादा हो और वह विश्वस्तरीय हों। आज भारत जरूरत का महज 36 प्रतिशत खाद्यान्न तेल स्वयं उत्पादित कर रहा है और बाकी आयात किया जा रहा है। राजस्थान में उत्पादित होने वाली सरसों में तेल की मात्रा 40 से 42 प्रतिशत है, जिसे अच्छी किस्मों को प्रोत्साहन देकर बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

डॉ. सैनी ने बताया सरसों के उत्पादन में कनाडा और चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। राजस्थान देश में सबसे अधिक 48 प्रतिशत सरसों उत्पादित करते हुए पहले स्थान पर है। सरकार सरसों आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने का पूरा प्रयास कर रही है। सरसों पर लगने वाले चूंगी कर को 1.5 प्रतिशत से घटाकर एक प्रतिशत किया गया। हाल ही में सरकार द्वारा इसे नकारात्मक सूची से बाहर किया गया है, जिसके बाद राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना और राजस्थान कृषि प्रसंस्करण एवं प्रोत्साहन नीति-2015 के तहत मिलने वाले फायदे सरसों के प्रसंस्करण उद्योग लगाने वाले उद्यमियों को मिल सकेंगे।.

कृषि मंत्री ने स्पष्ट किया कि सरसों के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सरसों की नई उत्पादन तकनीक और किस्में विकसित की जाएं। लेकिन, उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए जेनेटिक मॉडीफाइड तकनीक को भी अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने वैज्ञानिकों से भी परम्परागत किस्मों पर ही अनुसंधान करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि हाल ही के कुछ वर्षों में प्रति व्यक्ति खाद्यान्न तेल का उपभोग बढ़ा है। वर्ष 2009-10 में जहां प्रति व्यक्ति प्रति साल 13.3 किलो खपत थी, जो बढ़कर वर्ष 2012-13 में 15.8 किलोग्राम हो गई है। डॉ. सैनी ने बताया कि साल दर साल खाद्यान्न तेल की बढ़ते उपयोग को ध्यान में रखते हुए तिलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने पर जोर देना होगा। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक, सरसों के प्रसंस्करण से जुड़े उद्यमी और बड़ी संख्या में किसान व व्यापारी उपस्थित थे।

The Times of India

THE TIMES OF INDIA

EDITION	DATE	Page No
Jaipur	26-Mar-2017	02

Agri min, experts spar over introduction of GM mustard

Joychen.Joseph
@timesgroup.com

Jaipur: State agriculture minister Prabhulal Saini and agriculture experts differ on introduction of genetically modified (GM) mustard. While Saini stands for GM free mustard, experts argue that GM mustard is the way forward to increase productivity and income of the farmers.

The differences cropped up at SEA Rapeseed-mustard conclave held at a city hotel Saturday. While inaugurating the conclave Saturday Prabhulal Saini called for GM free mustard crop.

The minister said oil content of traditional mustard variety seed is 40-42 % and exhorted scientists to develop variety of mustard which has more oil content but Saini said he is not in favour of genetically modified ones.

However, agriculture experts and industry differed with the minister. Dr Deepak Pental of Centre for Genetic Manipulation of Crop Plants, University of Delhi, in his discussion on 'GM Mustard Seed-Pros and Cons', said " It is unfortunate that while Europe produce about 80 % of their mustard oil from GM mustard followed by China and Canada

FOR & AGAINST

about 70 %, we are still debating about it."

He said these technologies have been adapted by other countries almost 20 years ago and we are debating it now. He called for high breed variety resistant to disease built in to the seed. Bhagirath Chaudhary, founder director of M/s South Asia Bio Technology Centre (NGO) New Delhi, said India is largest importer of edible oil including mustard. "The irony is while it imports 15 million tones mustard oil from countries which produces its oil from genetically modified varieties, still we are not allowing this variety to farmers in the country which would have reduced our dependence on imports of edible oil." He said it is impossible to increase production without genetic improvement.

Denying breakthrough technology to famers is an injustice to them as wells the countr, said Chaudhary.

Vijay Sardana, head of M/s Global Food Security and Agri Business Policy, UPL group called for focusing on intercropping and byproducts mustard cake, honey and straw for industrial use.

Vir Arjun

वीर अर्जुन

D.L.(IP)-01/7095/06-08 www.viranjun.com ★★★राष्ट्रीय संस्करण

EDITION	DATE	PAGE NO
Jaipur	26-Mar-2017	08

जयपुर में रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव-2017

राजस्थान में दो साल बाद हुई सरसों की बम्पर पैदावार- सैनी

सरसों उत्पादन में भारत को आत्म निर्भर बनना होगा-चतुर्वेदी

वीर अर्जुन संवाददाता

जयपुर। द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफइण्डिया (एसईए) की ओर से अपनी एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सानिध्य में अपनी पहली रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 217 का शुभारंभ यहां मेरियट होटल में हुआ, इससे पूर्व कल शुक्रवार की शाम को प्रतिभागियों के पंजीकरण के बाद राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन हुए। आज सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी थे, उन्होंने इस कॉन्क्लेव को राजस्थान विशेष कर जयपुर में आयोजित किए जाने पर संगठन का आभार जताया।

कृषि मंत्री श्री सैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि" देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है, राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक कही जा सकती है। उन्होंने इसका श्रेय किसानों की मेहनत और अनुकूल जलवायु को दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए हमें और कम पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखना होगा। वैसे भी राजस्थान नवाचार के विषय में अग्रणी रहा है और यहां पहली बार ऑलिव एवं क्विनोवा तेलों का उत्पादन किया गया। खाद्य तेल सुरक्षा को बढ़ाने के साथ ही उन्होंने फसल की गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता प्रतिपादित की, भारत में सरसों का उत्पादन हजारों साल से हो रहा है लोगों का सरसों के प्रति विश्वास है हमें उस विश्वास को बनाए रखने के लिए गुणवत्ता में और सुधार लाना होगा साथ ही इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से उत्पादक किसान और निर्माताओं को एक मंच पर लाकर उनकी समस्याओं का समाधान खोजना होगा। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार इस प्रकार के नवाचारों के लिए सदैव तत्पर रहेगी। श्री सैनी ने कहा कि प्रदेश में तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। इससे पूर्व रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डोलिया और विजय डाटा ने अपने विचार व्यक्त किए। अपने स्वागत भाषण में एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल बम्पर पैदावार हुई है।

Virat Vaibhav

विराट वैभव

राष्ट्रीय अखबार - खोले वैभव के द्वार

EDITION	DATE	PAGE, NO
Jaipur	26-Mar-2017	02

सरसों के प्रति हेक्टेयर उत्पादन लक्ष्य हासिल करने के करीब प्रदेश

जयपुर। कृषि मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान में इस बार सरसों की बम्पर पैदावार हुई है और राज्य निर्धारित किए गए 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के लक्ष्य को हासिल करने के बहुत करीब है। उन्होंने कहा कि राज्य में पहले सरसों का उत्पादन 950 किलो प्रति हेक्टेयर था, जो इस वर्ष 1400 किलो प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी आधार पर अगर उत्पादन बढ़ता है, तो आगामी सीजन में 2000 किलो यानी 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सरसों का उत्पादन हो जाएगा। उन्होंने राजस्थान में इस बार 44 लाख मैट्रिक टन सरसों उत्पादन की संभावना व्यक्त की। कृषि मंत्रीं डॉ. सैनी शनिवार को यहां एक निजी होटल में इंटरनेशन कन्सलटीव ग्रुप फॉर रिसर्च ऑन रेपसीड द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

Daily News
डेली न्यूज
EDITION Jaipur
DATE 26-Mar-2017
PAGE NO 09

राजस्थान में हुई सरसों की ऐतिहासिक पैदावार- सैनी

प्रति हेक्टर 32 क्विंटल तक की पैदावार

तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति

डेली न्यूज

नई दिल्ली ▷ 25 मार्च

राज्य कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि देश की आजादी के बाद पहली बार इस वर्ष राजस्थान में 42 प्रतिशत तेल वाली सरसों की बम्पर पैदावार हुई है, राजस्थान के कुछ जिलों में तो प्रति हेक्टर 32 क्विंटल सरसों की पैदावार ली गई है, जो कि ऐतिहासिक है।

यह बात सैनी ने द सॉल्वेन्ट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने एसईए-रेपसीड-मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के सहयोग से रेपसीड-मस्टर्ड कॉन्क्लेव 2017 सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में कहीं। राजस्थान में पानी के अभाव को देखते हुए कम पानी में होने वाली सरसों के बीजों के शोध जारी रखना होगा। सैनी ने कहा कि प्रदेश में तिलहन प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। इससे पूर्व रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डोलिया और विजय डाटा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। एसईए के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा कि दो साल से सरसों की पैदावार कम होने के बाद इस साल बम्पर पैदावार हुई है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सोयाबीन पैदावार में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है और इंदौर को सोयाबीन की राजधानी कहा उसी प्रकार सरसों की पैदावार में राजस्थान अव्वल है और जयपुर को सरसों की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उन्होने कहा कि सरसों की पैदावार पर ध्यान देने के लिए इस कॉन्क्लेव का आयोजन किया है और इसकी शुरुआत जयपुर से की जा रही है जिसे वार्षिक स्तर पर आयोजित किया जाएगा।

इस सम्मेलन में विविध सत्रों में विचार-विमर्श एवं खुली चर्चा चली। इन सत्रों में निर्माताओं, निर्यातकों और आयातकों, टेक्नोलॉजिस्ट्स तथा कमोडिटी एक्सचेंज के खिलाड़ियों, ब्रोकर्स एवं डीलर्स के समक्ष आ रही समस्याओं को उठाया गया तथा उनके समाधान की दिशा में एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई। इस अवसर पर रेपसीड/मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के चेयरमैन डी.पी. खण्डेलिया, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) डॉ. अनुपम बारीक, इंडियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च के अतिरिक्त महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. एस. के. चक्रबर्ती भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में पूरे भारत भर से 300 प्रतिनिधि ने भाग लिया।